ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14 Vol-5, No.-II,PP-1-3, YEAR-Dec.2016

आदर्श राजत्व में राजा के विभिन्न कर्तव्य

❑ डॉ0 राकेश कुमार मिश्रा

सारांश– राजा का जन्म समाज में अराजकता को दूर करने के लिए हुआ था। राजा अपने राजत्व के कारण ही समाज में शान्ति स्थापित करने के लिए उत्तदायी था। अराजकता व शान्ति व्यवस्था स्थापित ही राजा की आवश्यकता प्रतीत हुई । महाभारत के शान्ति पर्व में इन्द्र मान्धाता से कहते है कि राजा, धर्म का रक्षक होता है जो धर्म पूर्वक राज्य करता है व देवता माना जाता है और जो अधर्मचारी होता है व नरक गामी होता है । जिसमें धर्म होता है उसी को राजा कहते है।[1]

राजा के कर्तव्यः– यजुर्वेद का कथन है कि राष्ट्र की रक्षा के लिए राजन्य अर्थात क्षत्रिय की सषष्टि हुई है।[2] अथर्ववेद का कथन है कि प्रजा को प्रसन्न करने के लिए राजन्य या राजा हुआ।[3]

कृष्यै त्वा, क्षेमाय त्वा, रय्यै त्वा, पोषाय त्वा ।

अर्थात कृषि की उन्नति के लिए, जन कल्याण के लिए, राष्ट्र की श्री–वृद्धि और समग्र विकास के लिए तेरा अभिषेक किया जा रहा है। राजा का परम कर्तव्य प्रजा में भयमुक्त समाज की स्थापना करना एंव शान्ति की स्थापना करना है ।

ऋग्वेद का कथन है राजा इतना प्रतापी हो कि पापी (असुर, राक्षस) छल प्रपंच और आतंक फैलाने की साहस ही न कर सके।'4' इससे स्पष्ट है कि प्रजा की बाहरी और अन्दर के सभी शत्रुओं से प्रजा की रक्षा करें और उसे भयमुक्त करे। महाभारत में भी कहा गया है कि वह राजा सर्वश्रेष्ठ है जिसे राज्य में प्रजा निर्भिक होकर विचरण करती जैसे पिता के घर में।[5] ऐतरेव ब्राहम्ण में राज्याभिषेक के समय ही राजा का कर्तव्य बताया गया है । अमित्राणा हन्ता अर्थात शत्रुओ को नष्ट करें। [6] राजा का प्रमुख कर्तव्य प्रजा का पालन करना , रक्षण करना एंव संवर्धन। इसलिए कहा गया है कि राजा की प्रकृति –रज्जनात् अर्थात प्रजा को प्रसन्न करना ही कहा जाता है ।

यजुर्वेद का कथन है कि प्रजा पाहि अर्थात प्रजा पालन राजा का कर्तव्य है।[7] यह भी कहा गया है कि राजा का परम कर्तव्य है कि वह प्रजा को इस प्रकार संरक्षण दे कि प्रजा को किसी प्रकार का कोई क्षति न पहुॅच।[8] महाभारत में वर्णन है कि राजा सात रूप में प्रजा का पालक है, वह माता, पिता, गुरू , रक्षक , अग्नि, कुबेर, और यम है। ऋग्वेद का कथन है, कि कठोर अनुशासन और निरीक्षण से राजा अधिराज होता है । यदि प्रजा पर कठोर अनुशासन नहीं होता है , तो प्रजा में अव्यवस्थता फैलती है।

राजा के धार्मिक कर्तव्य :– विभिन्न धर्मग्रन्थों एंव स्मृतियों में राजा के धार्मिक कर्तव्यों के बारे में विस्तृत विवरण मिलते है। कौटिल्य ने लिखा है कि राजा का धर्म तो दुष्टों का दमन करना ही है ।[9] जो राजा पापियों का निग्रह करता है, उसे उत्कृष्ठ धर्म की प्राप्ति होती है, राजा का कर्तव्य है कि स्वयं ईश्वर भक्त और आस्तिक हो । ऋग्वेद का कथन है कि राजा इन्द्र परमात्मा का प्रिय हो।[10] धार्मिक कर्तव्यों में ही पर्यावरण की सुरक्षा

और ध्यान आकृष्ठ करते हुए कहा गया है कि हे पृथ्वी माता तुम मुझे क्षति न पहुचाओं और मै न तुम्हें क्षति पहुचाऊ।[11] इसका अभिप्राय यह है कि मै पर्यावरण की सुरक्षा करू, वृक्ष वनस्पतियों को नष्ट न करने हेतु वृक्षारोपण आदि की ओर ध्यान दू । जिससे समय पर बृष्टि हो और देश में दुर्भिक्ष आदि का कोई संकट न हो।

राजा के आर्थिक एंव समाजिक कर्तव्यः– प्राचीन धर्मशास्त्रों में आर्थिक कर्तव्यों में कृषि विकास, ऐश्वर्य प्राप्ति, कोषवृद्धि आदि का उल्लेख राज्याभिषेक के समय राजा के कर्तव्यों हेतु निर्देश दिया गया है कि वह कृषि का विकास करे ।[12] राष्ट्रीय विकास के कार्यो में कृषि का महत्व बहुत है । कृषि से ही धन धान्य, सम्पदा की वृद्धि होती है अर्थात कृषि प्रधान देश, कृषि और किसानों को अभ्युदय की ओर ध्यान देना आवश्यक है अथर्ववेद में भी कहा गया है ऐश्वर्यशाली राजा कृषि को विकसित करे।[13] यर्जुवेद का कथन है कि राजा धार्मिक व्यवहार करते हुए प्रजा को पीड़ित न करते हुए प्रजा की आर्थिक स्थिति को उन्नति करे उन्हे ऐश्वर्य सम्पन्न करें । ब्राहम्ण, क्षत्रिय , वैश्य, सभी वर्गो की स्थिति में सुधार करे।[14] राजा को कोष की वृद्धि और धन का विभाजन करना चाहिए साथ ही कर संग्रह भी राजा को करना चाहिए जिससे कि वह भी अपने प्रजा में जन कल्याणकारी कार्यो को करें। अथर्ववेद में ब्रहमजाया नाम से 18 मंत्रो का एक सूक्त है।[15] जिसमें वर्णन है कि जिस राष्ट्र में ब्रहमजाया अर्थात विदुषी सुशिक्षित और कुलीन स्त्री का अपहरण होता है या उस पर अत्याचार होता है वह राष्ट्र नहीं रह सकता । इस प्रकार अपहरण, अनाचार या अत्याचार पुरे राष्ट्र को संकट में डाल देता है । जिस देश में ब्रहमजाया या स्त्री पर कोई अनुचित प्रतिबंध या उसका शील भंग किया जाता है । उस राष्ट्र की श्री–वषद्धि रूक जाती है।[16] राजा का परम कर्तव्य है कि राष्ट्र में स्त्रियों को पूर्ण संरक्षण एंव उनके शील की रक्षा करें, और उनपर किसी प्रकार का कोई अत्याचार न होने दे। ऋग्वेद का कथन है कि अशक्तों को सशक्त और सजीव बनाये एंव राजा को प्रजा में अशिक्षा को दूर करें एंव भूखों को अनादि दें। विद्वानों को संरक्षण एंव विश्व को ज्ञान की ज्योति एंव ज्ञान का प्रकाश जो संसार को अपने कर्तव्य की दीक्षा दे सकता है और उन्हे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जायेगा।

राजा और प्रजा में सम्बन्धः– प्राचीन धर्मशास्त्रों में राजा और प्रजा के सम्बन्धों के विषय में बहुत ही उपयोगी बाते बतायी गयी है । राजा को प्रजा में माता–पुत्र का सम्बन्ध होना चाहिए। राजा के अभिषेक में जन को सम्बोधित करते हुए उसे मातृतमा कहा गया है इसका अभिप्राय है कि राजा को प्रजा के साथ सम्बन्ध माता–पुत्र के तुल्य होना चाहिए । मंत्र में पस्त्यासु में पस्त्वा शब्द प्रजा के लिए है ।[17] मंत्र मे राजा को माता दीप्ति नहीं अपितु मातृतमा अर्थात आदर्श माता कहा गया है। अभिप्राय यह है कि आदर्शमाता के जो गुण होते है वे सारे गुण राजा में होने चाहिए। महाभारत के शान्तिपर्व में कहा गया है कि राजा को गर्भिणी स्त्री के तुल्य व्यवहार करना चाहिए जिसप्रकार गर्भिणी स्त्री मन को अच्छा करने वाला भोजन आदि का परित्याग करके गर्भस्थ बालक के हित का ध्यान रखती है उसी प्रकार राजा अपने प्रिय लगने वाले विषयों को छोड़कर जिसमें प्रजा का हित हो वही कार्य करें।[18] अथर्ववेद में कथन है कि राजा को प्रजा के पीछे चलना चाहिए अर्थात राजा को प्रजा की आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए प्रत्यन्नशील रहना चाहिए। राजा अपनी लोकप्रियता से सारी प्रजा को आकृष्ठ कर लेता है उसे प्रजा भी इच्छा के अनुकूल चलाती है

ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14

अथर्ववेद में कहा गया है कि राजा मै तुम्हारे हृदय को आकृष्ठ करता हूँ। तुम मेरे विचारो के अनुसार चलो।

राजा क्रूर कपटी, स्वार्थी न हो। विभिन्न धर्मग्रन्थों में कहा गया है कि तुम सांप की तरह हिंसक और क्रुर न हो अजगर की तरह सारी सम्पदा न खाकर बैठ जाओं। सत्य के मार्ग का अनुसरण करों और प्रजा में धनधान्य की वृद्धि करों। कौटिल्य अपने ग्रन्थ अर्थशास्त्र में राजा के महत्वपूर्ण कर्तव्यों का उल्लेख किया है उन्होने प्रजा की रक्षा करना राजा का सर्वप्रथम कर्तव्य बताया है । प्रजा की रक्षा करते हुए यदि राजा के प्राण चले जाये तो वह महान धर्म है । बौद्धायन धर्मशास्त्र तथा याज्ञवल्वय स्मृति में यह स्पष्ट किया गया है कि राजा वस्तुतः प्रजा का सेवक है। प्रजा अपनी आय का छठा भाग जो कर के रूप में देती है वह राजा का वेतन है ।[19]

प्राचीन विचारकों एंव धर्मगन्थों में राजा प्रजा के जानमाल की रक्षा और सर्वागीण विकास एंव अभ्युदय की व्यवस्था करता है । वह प्रजा से अपेक्षा भी रखता है कि वे उसके बनाये नियमों का पालन करके उसे सहयोग करें। राजा का महत्वपूर्ण कर्तव्य प्रजा की रक्षा करना था किसी भी प्रकार का निर्णय करते समय राजा सदैव ही जनता के सुख दुख का ध्यान रखता है यद्यपि जनता के लिए राजा एक प्रकार से दैव या किन्तु यर्थात में राजा के लिए प्रजा दैव थी और वह प्रजा का सेवक था।

निष्कर्ष :– आदर्श राजत्व में राजा के पद का अविर्भाय प्रजा की सुरक्षा के लिये हुआ है एंव प्रजा का हित ही राजा का अपना हित है । अपितु राजा प्रजा की रक्षा के लिए है। प्रजा के सुख में वृद्धि करने और उनके दुखों का निवारण करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहा है। प्राचीन भारत में राजा प्रजा में शान्त व्यवस्था एंव कर्तव्य परायणता में आवश्यक मदद करता था। राजा सात रूप में प्रजा का पालक था वह माता, पिता , गुरू , रक्षक, अग्नि, कुबेर और यम है। प्रजा के जान माल एंव बाहरी शक्तियों से अपनी प्रजा की रक्षा करता था। प्रजा की रक्षा करते हुए प्राण चले जाय तो वह महान धर्म था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महा0शान्ति 90,5।
2. क्षत्राय राजन्यम् यजु0 30.5।
3. यजुर्वेद 9.22।
4. ऋग्वेद 10.124.5।
5. ऋग्वेद 57–33।
6. ऐत्र0ब्रा0 8.17।
7. यजुर्वेद 7.17।
8. यजुर्वेद 13.30।
9. कौट0अर्थ0 1,2,4।
10. ऋग्वेद 4.22.4।
11. यजुर्वेद 10.23.।
12. कष्ष्वेत्वा यजु0 9.22।
13. कष्ष्वेत्वा यजु0 9.22।
14. यजुवेद 38.14।
15. अर्थववेद 5.17.1 से 18।
16. अर्थववेद 5.17.12 से 17।
17. यजुवेद 10.17।
18. महा0शान्ति0 56,44 से 46।
19. याज्ञवल्कय 1, 3,14 से 15।